विश्लेषण ज्ञाता कहते है सच्चा ज्ञान विज्ञान का कार्य है न कि दर्शन का

Topic- विधेयात्मक सापेक्षवाद, SEM-1, SC-101 Date-04.06.21

Positive Relativism BY-Dr.S.B Choudhary Period-1

- दर्शनशास्त्र का यह सम्प्रदाय प्रयोजनवादी अमेरिकन दृष्टिकोण का आधुनिक स्वरूप कहा जा सकता है। यह विचारधारा निरपेक्षवादी मतों एवं स्थापनाओं के विरुद्ध है

सापेक्षवाद का अर्थ है - कोई भी पदार्थ अपना गुण अपने अन्दर से ही नही प्राप्त करता बल्कि उस सम्पूर्ण परिस्थिति से जिसमे वह विद्यमान होता है। दूसरे शब्दों मे किसी भी पदार्थ का उसके सन्दर्भ से परे कोई अर्थ नही होता

- जो विचार या वस्तु एक व्यक्ति के लिये अच्छा है, वह दूसरे के लिये बुरा भी हो सकता है। इसे सापेक्षवाद का सिद्धान्त कहते है

- विधेयात्मक शब्द का प्रयोग शून्यवाद से भेद स्थापित करने के लिये होता है

⇒ विधेयात्मक सापेक्षवाद यह स्थापना करता है कि हरेक विचार या तथ्य का स्वरूप परिस्थिति एवं व्यक्ति के प्रत्यक्षीकरण के आधार पर क्रमशः बदलता रहता है। यह धारणा विकासशील संश्लेषण (Emergent-Synthesis) के नाम से पुकारी जाती है।

⇒ मारिस एल. बिगी (Morris L. Bigge) ने अपनी पुस्तक विधेयात्मक सापेक्षवाद की अधोलिखित विशेषताएँ बताई है।

- प्राप्त इन्द्रियजन्य भव वस्तुनिष्ठ सिद्धान्तों तथा विचारवादी आत्मनिष्ठ प्रवृत्तियों

- निश्चित यथार्थ को ढूँढना है अथवा इसके बारे में दर्पण जैसी रिपोर्ट देना - इस विचार का विरोध करना
- कार्य, प्रत्ययीकरण, तथा नियन्त्रण का अधिक महत्व होता है न कि देखने और रिपोर्ट प्रस्तुत करने का
- ज्ञान के सिद्धान्तों तथा मूल्य के सिद्धान्तों को परस्पर जोड़ना
- ज्ञान की कोई सीमा नहीं होती और मनुष्य की संभावना के बारे मे कोई रेखा नहीं खींची जा सकती
- विद्यालयों के भीतर तथा बाहर प्रजातान्त्रिक दृष्टिकोण विकसित करने पर बल देना।

विधेयात्मक सापेक्षवाद के अनुसार शिक्षण तथा अधिगम की धारणा

अधिगम एक ऐसी प्रक्रिया है जिससे व्यक्ति की अन्तर्दृष्टि एवं समझ का प्रयोजनात्मक विकास होता है और व्यक्ति के ज्ञान तथा अन्वेषण की प्रवृतियों मे विस्तार किया जाता है। व्यक्ति द्वारा अर्जित ज्ञान उसकी निजी शक्ति बन जाती है। व्यक्ति के सीखने की क्रिया मे प्रमुख है - विभेदीकरण, सामान्यीकरण एवं व्यक्ति का अपने मनोवैज्ञानिक पर्यावरण मे पुनर्स्थापन।

शिक्षण की धारणा के बारे मे विधेयात्मक सापेक्षवादी यह राय रखते है कि इसके अन्तर्गत अध्यापक तथा शिक्षार्थी किसी ज्ञान विशेष के क्षेत्र मे अनुसन्धान करते है और समस्याओं का पता लगाना एवं उनका समाधान प्राप्त करने के प्रति हर सम्भव साक्ष्यों को एकत्र करना अध्यापक एवं शिक्षार्थी दोनों का सामूहिक दायित्व है।

शैक्षिक पाठ्यक्रम के बारे मे विधेयात्मक सापेक्षवादी किसी निश्चित सूचना समूह को शिक्षा प्रक्रिया का अंग नहीं मानते। शिक्षण के पहले पाठ्यक्रम का निर्धारण करना उनकी दृष्टि मे न तो उचित है और न ही सम्भव है

तार्किक विधेयवाद ने भाषा वैज्ञानिक तथा गणितीय समस्याओं पर ओर दिया और इसके प्रमुख नेता थे - श्लिक (Schilck) हॅन (Hahn) फीग्ल (Feigl) फ्रैंक, न्यूरात तथा कार्नेप